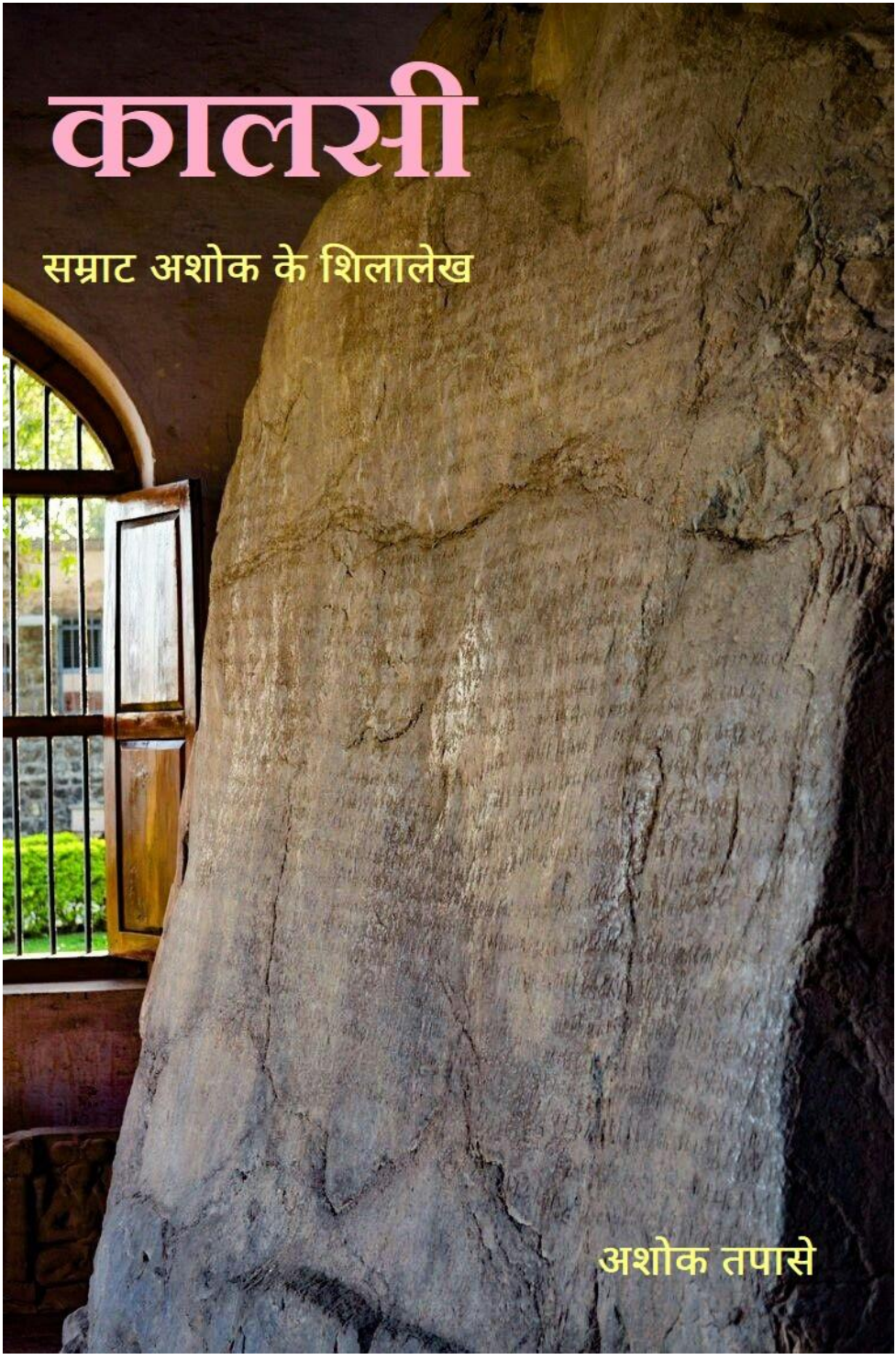
कालसी
सम्राट अशोक के शिलालेख
अशोक तपासे

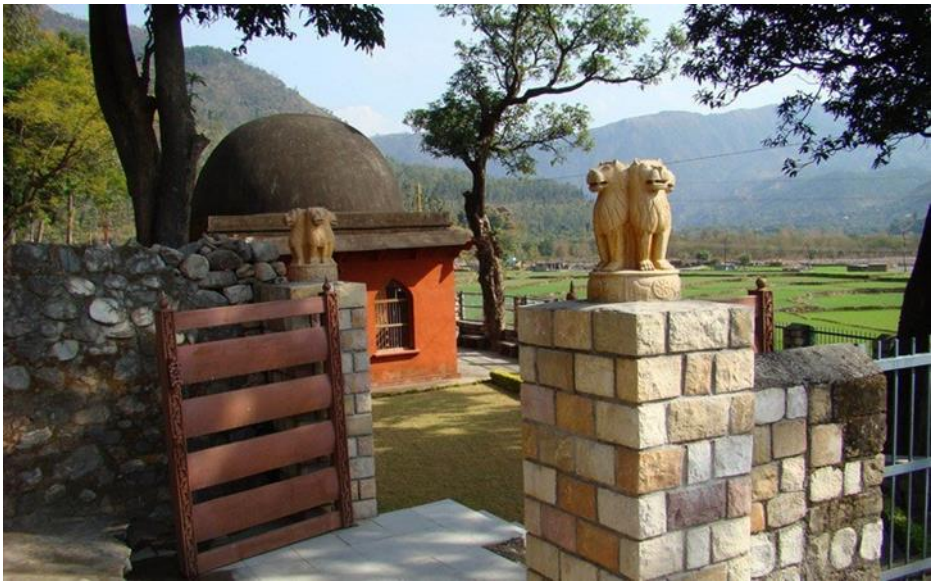

कालसी शिला सम्राट अशोक के इतिहास और सम्राट अशोक की सहृदयता दर्शाता भारत में स्थित एकमात्र साक्ष्य है। इसका परिरक्षण तथा इसका अध्ययन भारत के प्रत्येक नागरिक के लिये महत्वपूर्ण होना चाहिये यह मेरी धारणा है। यह हमारे प्राचीनतम लिपी तथा ज्ञान पूर्ण इतिहास का सुंदर प्रतीक है।

कालसी

सम्राट अशोक के शिलालेख

लेखन व चित्र संपादन

अशोक तपासे

पुरिस-दम्म प्रकाशन

अगर आपको यह eBook प्राप्त हुई है तो आप इसे पढ़कर अपने अन्य स्नेही जनों को भी दे सकते है, लेकिन इस के किसी भी भाग को किसी भी अन्य माध्यम के द्वारा, लेखक की अनुमति के सिवा, पुनः प्रकाशित न करें।

© हर्षदा तपासे

संपर्क दुरध्वनी

09930112113

09969112113

08879112113

हमारी यात्रा

भारतवर्ष में सम्राट अशोक के बहुत सारे शिलालेख और स्तंभलेख प्राप्त हुए हैं। अगर इन लेखों को वर्गीकृत किया जाए तो इसके दो भाग होते हैं, जिसमें एक भाग है स्तंभलेख और दूसरा भाग शिलालेख। स्तंभ लेखों में दो प्रकार के स्तंभलेख है, एक विशाल स्तंभलेख और दूसरे लघु स्तंभलेख। इसी प्रकार शिलालेखों के भी दो प्रकार हैं, एक है बृहद शिलालेख तथा दूसरा लघु शिलालेख। बृहद्-शिलालेखों में बडे शिलाखंड पर चौदा शिलालेखों को लिखा गया है। इस शृंखला के अंतर्गत एक बृहद शिलालेख गुजरात के जूनागढ़ शहर में गिरनार पहाडी की राह पर स्थित है। मुंबई के नजदीक सोपारा में तथा दक्षिण में येरागुडी, कर्नाटक में है। पूर्व में ओडिशा मे, धौली तथा जौगड इन गांवों में है। उत्तर में देहरादून से करीब कालसी नाम के गांव में है। इसी शृंखला के दो शिलालेख उस समय के गांधार प्रांत, जो आज का पाकिस्तान है, में शहाबाजगढी तथा मानसेहेरा मे स्थित है, जो खरोष्ठी लिपी मे अंकित है।

कालसी में स्थित शिलालेख विशेष है, इसलिए की गिरनार शिलालेख में लेख क्रमांक पांच और लेख क्रमांक तेरा क्षतिग्रस्त (शिला टूट चुकी) है। सोपारा में जो शिलालेख का एक टुकड़ा मिला है वह केवल नौवें शिलालेख का है। येरागुड़ी, कर्नाटक में जो शिलालेख पाए हैं वह जगह जगह पर क्षतिग्रस्त है। ओडिशा में धौली और जौगड मैं पाए शिलालेखों में ग्यारह, बारह और तेरह क्रमांक के शिलालेख उपलब्ध नहीं है। सम्राट अशोक ने यह तीन शिलालेख यहाँ पर लिखवाए ही नहीं थे। केवल कालसी शिलालेख ऐसा है जिसमें पहले शिलालेख से लेकर चौदहवे शिलालेख तक सभी शिलालेख अक्षत देखने को मिलते हैं। यहाँ पर तेरहवें शिलालेख की केवल दो पंक्तियाँ क्षतिग्रस्त है, लेकिन अन्य शिलालेखों की तुलना के पश्चात यह

दो पंक्तियाँ प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार से हम निश्चित रूप से यह कहते हैं की कालसी यह एक महत्वपूर्ण शिलालेख है।

इन बातों के बावजूद अधिकतर अभ्यासक सम्राट अशोक के बृहद शिलालेखों का अभ्यास करने के लिये गिरनार शिलालेखों का सहारा लेते है। कारण यह है की केवल गिरनार शिलालेख मे १ से १४ सभी शिलालेख अलग अलग चौकोन खींचकर उसी में लिखे है। इस चौकोन मे हर पंक्ति उतनी ही लंबी है, जितनी की पढ़ने में आसान हो। इसकी तुलना में कालसी शिलालेख के एक से बारह लेख एक के बाद एक, बिना किसी अंतराल से या बिना नयी पंक्ति की शुरुवात से लिखे गये है। यह पंक्तियाँ भी इतनी लंबी है की इन में सौ से अधिक अक्षर लिखे है।

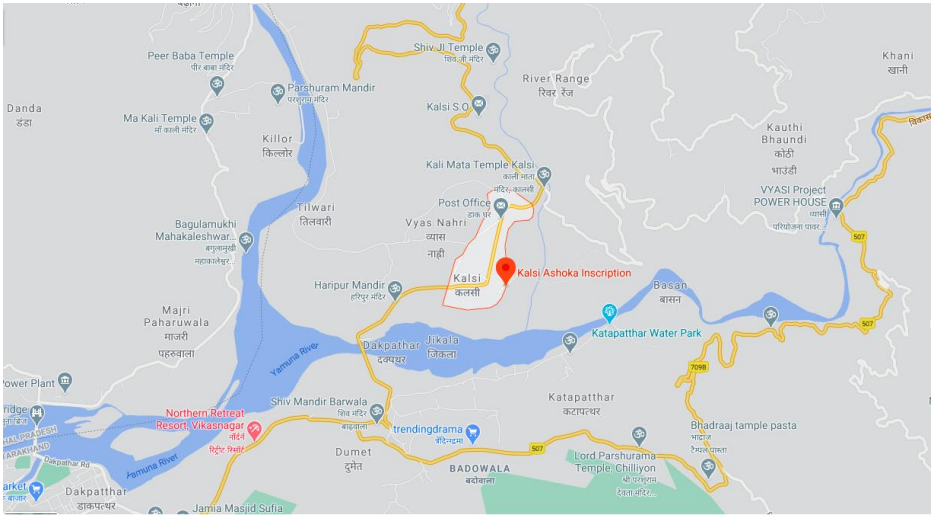

कालसी यह गाँव देहरादून शहर के पश्चिम में थोड़ा सा उत्तर दिशा की ओर करीब पैतांलीस किलोमीटर की दूरी पर बसा हुआ है। यह स्थान यमुना और तौंस नदी के संगम के पास यमुना के तट पर है। नदियों के संगम के और हिमालय की उपशाखाओं के पास होने के कारण यह परिसर बहुत ही

रमणीय है। उत्तर की ओर हिमालय पर्वत की उप शाखाएं दिखती है तथा गाँव के करीब से दक्षिण में यमुना बहती है।

इस बड़ी सी शिला पर एक गुम्बदाकार इमारत बनाकर यह शिला संरक्षित की गई है। इस शिला के तीन प्रतलों पर शिलालेख अंकित है। पूर्व प्रतल पर एक से लेकर बारह तक के सभी शिलालेख अंकित हैं, तथा तेरहवे शिलालेख का आधा भाग यही पर है। बचा हुआ आधा भाग दक्षिण प्रतल पर अंकित हैं, जहाँ पर चौदहवा भाग भी अंकित है। उत्तर प्रतल पर एक हाथी का चित्र अंकित हैं जिसके नीचे 'गजतमे' ऐसा शब्द ब्राम्हि लिपि में लिखा हुआ है।

इस शिलालेख को देखनेका सफर मैने मेरी जीवन संगीनी हर्षदा के साथ १८ नवंबर २०१२ को किया था। दिल्ली मे पहाडगंज से सुबह ६.०० बजे भाडे की गाडी मे बैठकर हम निकल पडे। सफर काफी लंबा था, और अनजानी राहोंपर भी था। हमारा चालक केवल हमारे इशारोंपर गाडी चला रहा था, क्यों की उसे कालसी नाम का कोई गाँव पता नही था। हम लोग गुगल के सहारे जो गाँव बीच मे पडते थे उन तक पहुँचने का रास्ता पुछते पुछते आगे बढते गये। रास्ते की हालत उस वक्त बिलकुल ठीक नही थी। शायद हम सही रास्ते से भटककर कहीं छोटे रास्ते से गुजर रहे थे। कुछ समय बाद हम सहाराणपुर पहुँचे। फिर लगा की हमारी मंजिल अब दुर नही है। इसके कुछ देर बाद जंगल का रास्ता शुरु हुवा। जंगल, पहाडी और कई मोड वाला रास्ता तय करके छः/सात घंटो के बाद हम पहाडी रास्ते से निकलकर डाकपत्थर नामक गाँव पहुँचे। अब पता हुवा की अगला गाँव हमारा मकाम है। फिर एक जगह चाय-नाश्ता करके आधे घंटे के बाद हम कालसी पहुँचे थे। शिलालेख का स्थान ढुंढने मे कोई दिक्कत नही हुई।

कभी सोचा नही था की हम कालसी शिलालेख देखने आयेंगे, लेकीन सम्राट अशोक के प्रति हमारी श्रद्धा हमें यहाँ तक ले आई।

शिला लेख परिसर को चारो तरफ चार फीट उंची दीवार और उसके उपर लोहे की सलाखों की घेराबंदी बनी हुवी थी। प्रवेशद्वार के दोनो तरफ पत्थरों से बने काफि मोटे चौरस खंभे थे जिनके उपर सम्राट अशोक की चतुर्सिंह मुद्रा लगी हुई थी। वहाँ खडे होकर अपनी तस्वीर खिंचवाने की प्रबल इच्छा को हम टाल नही सके।

यहां से कुछ चार-पांच सिढीयाँ उतरकर हम अपने इच्छित जगह को देखने वाले थे। साफ सुथरी पगडंडी और दोनो तरफ हरीयाली बनी हुवी थी। लंबे उद्यान के बीच वह इमारत हमारे ही इंतजार मे खडी थी। सीढीयों पर खडे होकर पुर्व दिशा की ओर सुंदर नजारा दिखता था। यमुना नदी का पात्र बहुत दूर दिखाई दे रहा था। नदी का पात्र और इस स्थान के बीच बहुत सारे खेत दिखाई देते थे और नदी के पार जंगल की हरियाली से व्याप्त पहाडी।

बहुतही सुंदर नजारा हम देख रहे थे। सम्राट अशोक के शिलालेख देखने से होने वाली मन की तृप्ति होनी ही थी के उसके पहले प्रकृति के सौंदर्य का रसास्वाद हमे तृप्त कर गया।

दाहीनी तरफ परिसर के द्वार स्तंभ पर सम्राट अशोक की मुद्रा है, जिसके पिछे शिला के संरक्षण की गुम्बदाकार या स्तुप के आकार की इमारत दिख रही है।

जैसे ही शिला के सामने आया, मेरा मन आनंद से विभोर हुवा। उत्कटता से मैने शिला के सामने जमीन पर लेटकर अष्टांग प्रणाम किया। यह प्रणाम सम्राट अशोक के प्रति था। यह प्रणाम जेम्स प्रिंसेप के प्रति था जिन्होने इस के अक्षरों को अज्ञात से ज्ञात बनाया था। और यह प्रणाम इनके साथ साथ अलेक्झांडर कनिंघहॅम के प्रति भी था, क्यों की उन्होने बनाया हुवा कालसी शिलालेख का रेखाचित्र मेरे मन मे इसे देखने की तीव्र इच्छा जगाये हुए था।

फिर हम इस शिलाके निकट गये। यह शिला का पूर्व प्रतल था। कुछ अक्षरों को पढनेका प्रयास हुवा, लेकीन हमारे और शिला के बीच मे लकडे की

घेराबंदी लगी हूई थी। जिससे हम अक्षरोंको परखने तक की दूरी से कुछ अधिक दूर खडे होकर शिलालेख निहारने लगे। फिर मुझे याद आया की कनिंघहॅम जी ने इस शिला के रेखा चित्र मे एक हाथी का चित्र भी बनाया है। सम्राट अशोक के जमाने मे श्रद्धा जताने के लिये तथागत बुद्ध की कोई प्रतिमा नही बनाई जाती थी। हाथी के चित्र को तथागत के रुप मे देखा जाता था। मै उस चित्र को ढुंढते हुए शिला का उत्तर प्रतल देखने के लिये

शिला के पूर्व और उत्तर प्रतल का एकसाथ दर्शन

यहाँ पर हाथी का चित्र तो था, लेकीन प्रकाश की कमी के कारण हम उसे ठीक से नही देख पा रहे थे। दक्षिण की खिडकी से काफी प्रकाश आ रहा था और यह चित्र प्रकाश के विरुद्ध दिशा मे था। पराकाष्ठा से हम **गजतमे** यह अक्षर पढ़ पायें। मन ही मन तथागत बुद्ध को अभिवादन किया। फिर हम दोनो शिला का दक्षिण प्रतल देखने के लिये दक्षिण की खिडकी के पास

गये। यहाँ पर योग्य प्रकाश होने के कारण लिखे हुवे अक्षर अच्छे दिख रहे थे। हमने दोनो तरफ से अच्छी तस्वीरे लेने का प्रयास किया और फिरसे सामने पूर्व की ओर आयें। वहाँ पहले से कुछ अन्य दर्शक मौजुद थे। उन्हे हमारे दोनों की एक साथ उस शिला के पास खडे होकर तस्वीर लेने की विनती की। बहुत ही सुंदर और यादगार तस्वीर हमे प्राप्त हुई।

शिला का पुर्व प्रतल और हम

शिला का दक्षिण प्रतल

कालसी शिलालेख के पूर्व प्रतल का छाप

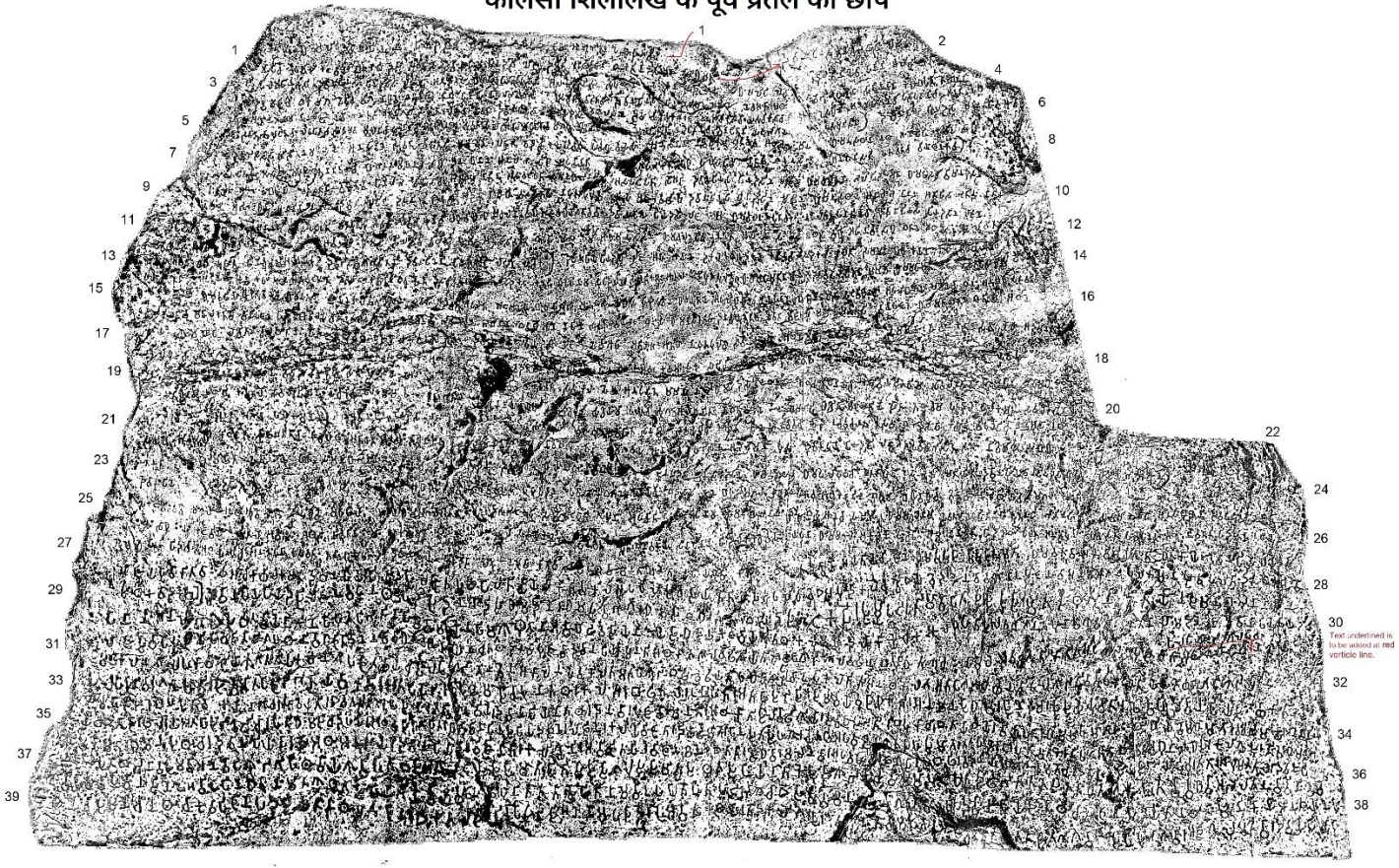

कालसी शिलालेख - पुर्व प्रतल

जेम्स प्रिंसेप, अलेक्झांडर कनिंघहॅम के ऋण

जेम्स प्रिंसेप जी ने इस लिपी को आकलनीय न बनाया होता,
यह सारे चित्र अलेक्झांडर कनिंघहॅम जी ने उसी समय नही बनाये होते,
तो शायद इस महान सम्राट अशोक के विचार दर्शन से हम भारतीयों को
न जाने और कितने वर्ष वंचित रहना पडता था।

मेरा प्रयास

अगले कुछ पन्नों मे हम इन शिलालेखों के मुल रेखाचित्र तथा लिप्यांतरण के साथ इनके हिन्दी अनुवाद को भी पढेंगे।

जैसे की हम पिछले भाग मे पढ चुके है और पिछले पन्ने पर शिला के पूर्व प्रतल का संपूर्ण चित्र देख चुके है। इस शिलालेख का प्रत्येक भाग अलग करके इसे सहजता से पढ़ने योग्य बनाना एक कठीन कार्य है। इस कार्य को सही अंजाम देने के लिये मैं ने पहले १ से १३ शिलालेखों को अलग कर लिया है। फिर इस प्रत्येक भाग के बायें और दायें (Left & Right) दो अलग टुकडे किये है। अब इस टुकडों की पंक्तियों का एकांतरीत लिप्यांतरण किया है (L1, L2... R1, R2...)। इस प्रक्रिया से इस मुल ब्राम्हि लेख तथा देवनागरी लिप्यंतरण उचित परिक्षेप मे आकलनीय हुवा होगा, ऐसी मेरी धारणा है।

गिरनार शिलालेख से अलग बात यह है की यहां पर कई जगहों पर दो शब्दों के बीच अंतर रखा गया है, जो आकलनीयता बढाने मे सक्षम साबीत हुवा है। गिरनार मे लिखी प्राकृत यहां की प्राकृत से अल्पतः अलग है, जैसे गिरनार मे लिखा **'बाम्हण'** यहाँपर **'बंभन'** होता है। गिरनार के **'ञ'** की जगह यहाँ पर **'न'** पढने को मिलता है। **'राजा'** की जगह यहाँ **'लाजा'** होगा। अन्य भी फर्क दिखते है जो आप अगले पन्नों मे महसुस करेंगे। गिरनार में **बाम्हण** लिखने के लिये **म+ह** लिखा है न की **ह+म**, यह गौर किया जाना चाहिये।

कालसी शिलालेख क्र. १

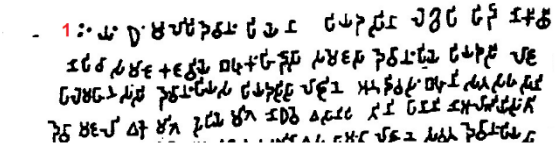

Left Half

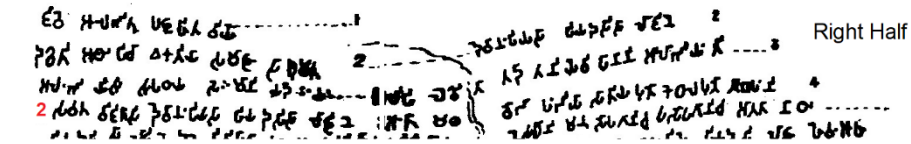

Right Half

देवनागरी लिप्यांतरण

1L. इयं धंमलिपि देवानंपियेना पियदसिना लेखपि.. हिदा नो कीछी जीवे अलभितु पजहितविये

1R. नो पि चा समाजे कटविये बहुकं हि दोसा समाजसा देवानंपिये पियदसि लाजा

2L. दखति अथि पि चा एकतिया समाजा साधुमता देवानंपियसा पियदसिसा लाजिना

2R. पालेमहानसंसि देवानंपियस पियदसिसा लाजिने अनुदिवसं बहुनी सतसहसानि

3L. अलंभि यिसु सुपठाय से इमानि यदा इयं धंमलिपि लेखिता तदा तनि येवि पानानि अलाभियंति

हिन्दी अनुवाद

यह नीतीलेख देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजाने लिखवाया। यहाँ जनहित के लिये किसी भी जीव की हत्या न करे। समाजोत्सव भी ना (करें)। देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजाको ऐसे उत्सवों मे अनेक दोष दिखते है। फिर भी कुछ उत्सव देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा को अच्छे लगते है। देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा की पाकशाला मे हर रोज अनेक सौ-हजार प्राणी पक्वान्न के लिये मारे जाते है। पर अब यह नीतीलेख लिखते समय पक्वान्न के लिये केवल तीन प्राणी मारे जाते है, दो मोर और एक हिरन। और हिरन भी हमेशा नही। आगे से यह तीन प्राणी भी नही मारे जाएंगे।

कालसी शिलालेख क्र. २

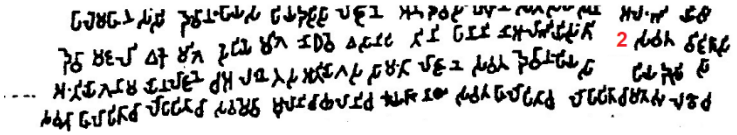

Left Half

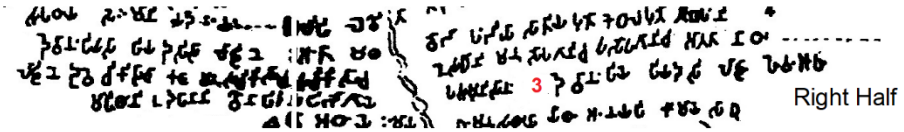

Right Half

देवनागरी लिप्यांतरण

1L. सवत विजितसि

1R. देवनंपियसा पियदसिसा लाजिने अंता मथ चोडा पंडिया सातियपुतो तंबपंनि

2L. अंतियोगेनाम योनलाजने च अलंनेस अंतियोगस सामंता लाजाने सवत देवानंपियसा पियदसिसा

2R. लाजिने दुवे चिकिसाज कटा मनुसचिकिसाय पसुचिकिसाच ओसधानि मनुसोपगानिच पसुपगानिच अतता नाथि

3L. सवता हालापिताचा लोपपिताचा सवमेवा मुलानिच फलानिच अयता नथि सवतहालोपिताच लोपापिताच मतेसु लुखाच

3R. महिथानि उदपानानि खानापितानि पटिभागाये पसुमुनिसानं

हिन्दी अनुवाद

देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा के राज्य मे सर्वत्र और सीमा पार जैसे चोड, पांड्य, सत्यपुत्र तथा ताम्रपर्णी, यवनराजा अंतियोक और अंतियोक के और आगे राज्यों मे सर्वत्र देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा ने दो चिकित्सा की है, मनुष्यचिकित्सा और पशुचिकित्सा। मनुष्योपयोगी और पशु-उपयोगी औषधी जहाँ नहीं (वहाँ) सर्वत्र, (अन्य जगहों से) लाकर लगवाई है। कंदमूल और फल जहाँ जहाँ नही (वहाँ) सर्वत्र लाकर लगवाये है। राहगीरों को जल हेतु कुएँ खुदवाएँ है पशूओं के और मनुष्यों के उपयोग के लिये।

कालसी शिलालेख क्र. ३

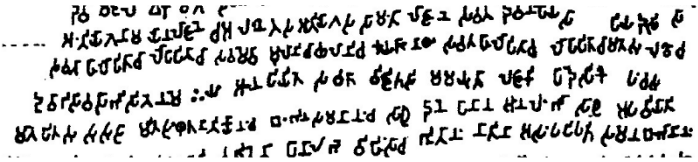

Left Half

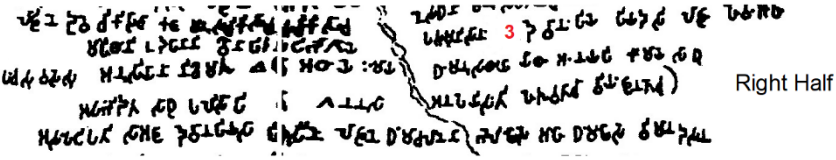

Right Half

देवनागरी लिप्यांतरण

R1. देवानंपिये पियदसि लाजा हेवं आहा

L2. दुवाडस वसाभिसितेन मे इयं आनपियिते. सवता विजितसि मम युता लजकि पादेसिक पंचसु

R2. पंचसु वसेसु अनुसियानं निखमतु एताये अठाये इमाय धंमानुसथिया याथा अंताय पि कंमाये साधु

L3. मात पितसु सुसुसा मितसंथुत नातिक्यानंच बंभन समनानंच साधु दाने पानान अनलंभा साधु अपवियाति

R3. अपभिंदत साधु पलिसापि च ... गननसा अनपेयिसंति हेतुवता चा वियंजनतेच

हिन्दी अनुवाद

देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा ने ऐसे कहा। अभिषेक के पश्चात बारह वर्षों बाद मै यह आज्ञा करता हुँ। मरे राज्य मे सर्वत्र युक्त, रज्जुक और प्रादेशिक ऐसे (शासक) है, वे हर पाँच पाँच वर्षों मे नियमित धम्मशासन के लिये जाएँ तथा ऐसे अन्य कारोबार करें। माता-पिता की सेवा करना उत्तम। मित्र, आप्त, रिश्तेदार, ब्राम्हण व श्रमण इन्हे दान देना उत्तम। जीवहिंसा न करना उत्तम। अल्पव्यय व अल्पसंचय करना उत्तम। परिषद की ओर से ऐसी और अन्य आज्ञा संक्षेप मे तथा विस्तार मे दी जायेगी।

कालसी शिलालेख क्र. ४

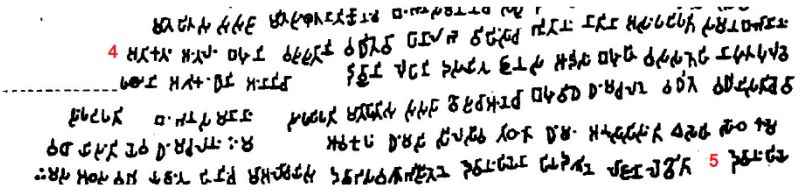

Left Half

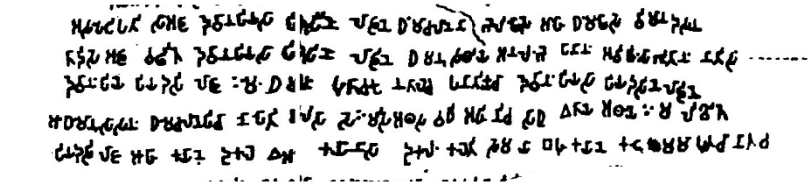

Right Half

देवनागरी लिप्यांतरण

L1. अतिकतं अंतलं बहुनि वससतानि वधितेवा पानालभे विहिंसाच भुतानं नातिना असंपटिपति समनबंभनानं

R1. असंपटिपति साअज देवानंपियसा पियदसिनो लाजने धंमचलनेना भेलिघोसे अहो धंमघोसे विमान दसन

L2. हथिनि अगिकंधानि अंनानिचा दिव्यानि लुपानि दसयितु जनस आदिसं बहुली वससतेहि ना हुतपुलुवे

R2. तादिसे अज वढिते देवानंपियसा पियदसिना लाजिने धंमनुसथिये अनलंभे पानानं अविहिंसा भुतानं नातिसं

L3. संपटिपति बंभनसमनानं संपटिपति मातापितिसु सुसुसा खिसचा अंनेचा बहुविध धंमचलने वधिते वधियिसतिचेवा

R3. देवानंपिये पियदसि लाजा इमं धंमचलनं पुताच कं नाताले च पनातिक्यचा देवानंपियसा पियदसिने लाजिने

L4. वधेयिसंति येव धंमचलनं इमं आवकुपं धंमसि सिलसाव तिठितं धंमं अनुसासिसंति एसेही सेथे कंम

R4. अं धंमानुसासनं धंमचलनेपिचा नोहोति असिलसा से इमिस अथस वधे अहिनिच साधु एताये अथाये इमं लिखिते

L5. इमस अठस वधि युजंतु हिनिंच मा अलोचयिसु दुवाडसवशाभिसितेने देवानंपियेना पियदशिने लाजिना लिखिता

हिन्दी अनुवाद

अनेक (या), सौ वर्षों का समय बीत गया, प्राणियों का वध – जीव हिंसा, जातीयों प्रति तथा ब्राम्हण-श्रमणों के प्रति अनादर बढ रहा है। आज प्रजाजनों को विमान* दिखाकर, हाथी दिखाकर, अग्निशिखा दिखाकर और ऐसेही अन्य भव्य-दिव्य दृष्य दिखाकर देवांनाप्रिय प्रियदर्शी राजा के धम्माचरण से ढोल-नाद भी धम्म-नाद हो रहा है। जैसे अनेक शत-वर्षों मे कभी न हुवा ऐसे, देवांनाप्रिय प्रियदर्शी राजा के धम्मानुशासन से, प्राणियों के अ-वध, जीव अहिंसा, जातीयों के प्रति सद्-भाव, ब्राम्हण-श्रमणों के प्रति आदर, माता-पिता की सेवा, बडों की सेवा ऐसा सद्-भाव बढ रहा है। ऐसे ही अनेक प्रकार से धम्माचरण बढ रहा है। ऐसे ही देवांनाप्रिय प्रियदर्शी राजा का धम्माचरण बढते रहेगा। देवांनाप्रिय प्रियदर्शी राजा के पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र सृष्टी के अंत तक ऐसे ही धम्माचरण वृद्धी को प्रेरणा देते रहेंगे और धम्म से और शील से प्रतिष्ठित होकर धम्मानुशासन करेंगे। क्यों की यह धम्मानुशासन ही श्रेष्ठ कर्म है। शीलहीन से धम्माचरण नही होता है। इसलिये इस कार्यका उत्कर्ष होना, अपकर्ष न होना उत्तम। आप इस उत्कर्ष में और अपकर्ष-रोध में मगन रहो इसलिये यह लिखवाया है। अभिषेक पश्चात बारह वर्षोंबाद देवांनाप्रिय प्रियदर्शी राजा ने यह लिखवाया है।

* - पालि शब्दकोश में **विमान** इस शब्दका अर्थ **बड़ा भवन** या **बड़ा रथ** ऐसा दिया है।

कालसी शिलालेख क्र. ५

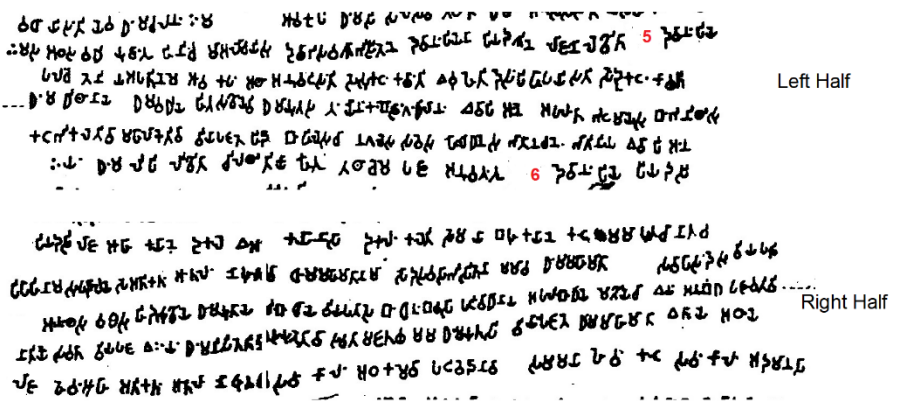

देवनगरी लिप्यांतरण

L1. देवानंपिये

R1. पियदसि लाजा अहा. कयाने दुकले. ए आ(दिकले) कयानसा से दुकलं कलेति. से ममया बहु कयाने कटे. ता ममा पुता चा नात च

L2. पलं चा तेहि ये अपतिये मे आवकपं तथा अनुवटिसंति से सुकटं कछंति. ए चु हेता देसं पि हापयिसति से दुकटं कछंति.

R2. पापे हि नाम सुपदालये. से अतिकंतं अंतलं नो हुतपुलुव धंममहामता नामा. ते*दसवसाभिसितेना ममाव धंममहामता (कटा ते) सवपासंदेसु वियापटा

L3. धंमाधिथानाये चा धंमवढिया हितसुखाये वि धंमयुतस तं योन कंबोज गंधालानं ए वा पि अंने अपलंता. भटमयेसु बंभनिथेसु

R3. अनथेसु वधेसु हिदसुखाये धंमयुताये अपलिबोधाये वियपतासे. बंधनंबढसा पटिविधानाये अपलिबोधाये मोखाये चा एयं अनुबधा पजाव तवि

L4. कटाभिकाले ति वा महालके ति वा वियापटा ते. हिदा बाहिलेसु चा नगलेसु सवेसु पोलोधनेसु भातानचने भतिनिय ए वा पि अंने

R4. नातिक्ये सवता वियापटा. ए इयं धंमनिसिते ति वा दानसुयुते ति वा सवता विजितसि ममा धंमयुतसि वियापटा ते धंममहामता. एताये अथाये

L5. इयं धंमलिपि लिखिता चिलिथितिक्या होतु तथा चे मे पजा अनुवतंतु.

* तेदसवसाभिसितेन (धौलि शिलालेख की तुलना से)

हिन्दी अनुवाद

देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा कहते है। कल्याण(कारी) (कार्य करना) दूष्कर। जो कल्याणकारी (कार्य) पहले करता है वह दूष्कर (कार्य) करता है। मैने अनेक कल्याणकारी काम किये है। मेरे पुत्र, पोते और आगे उनकी संताने ऐसे (मेरा) अनुकरण करेंगे। वे सुकृत्य करेंगे और जो इसकी (इस कार्य की) जरासी भी उपेक्षा करेंगे वे दूष्कृत्य करेंगे। पाप (दूष्कृत्य) आसान होता है। काफि अरसा बीता, जिसके पुर्व धर्ममहामात्र नामके (अधिकारी) नही थे। अभिषेक के तेरह वर्ष बाद मैने धर्ममहामात्र किये है। वे सभी संप्रदायों मे जे धर्मयुक्त है, उनके हित-सुख के लिये, और यवन, कंबोज, गांधार, अपरांत (और उससे भी पार) धर्म-अधिष्ठान के लिये तथा धर्मवृद्धी के लिये नियुक्त किये है। कष्टकरी, ब्राम्हण, धनीक, अनाथ, वृद्ध इनके हित-सुख के लिये, धर्म-पारायणता के लिये, तथा उनकी बाधा-निवारण के लिये वह (धर्ममहामात्र नामित) है। बंधन-बंधितों के (कैदीयों के) पालन-पोषण के लिये, बाधा-निवारण के लिये तथा जिनकी संतती है, जो विपत्तिग्रस्त या वृद्ध है, उनकी मुक्तता के लिये यह (धर्ममहामात्र नामित) है। यहाँ पाटलीपुत्र मे और बाहेर के सभी नगरों मे, बंधू, भगीनी तथा अन्य रिश्तेदार इन सभी के अंतःपूर मे (घरो-घरों मे) वह (धर्ममहामात्र नामित) है। मेरे राज्य मे सर्वत्र धर्म-पारायण लोगों मे, धर्म-श्रद्धावान और दानशूर लोगों मे धर्ममहामात्र नामित है। यह चिरस्थायी हो और मेरे प्रजा जन इसका अनुसरण करे इस लिये यह नीती-लेख लिखवाया है।

कालसी शिलालेख क्र. ६

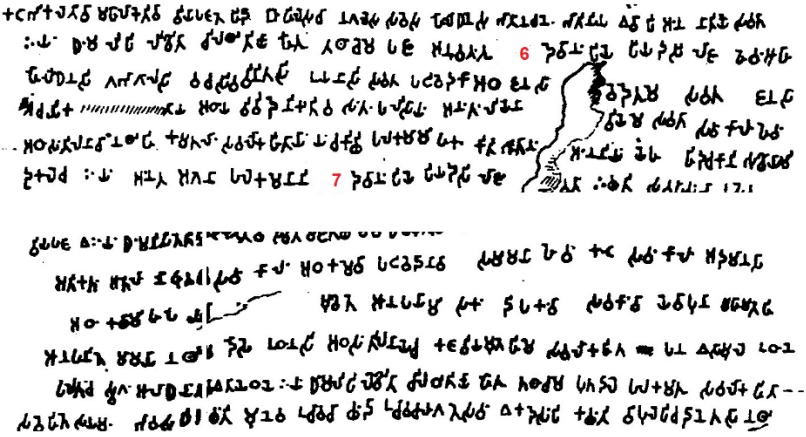

देवनागरी लिप्यांतरण

1L. देवानंपिये पियदसि लाजा हेवं आहा

1R. अतिकतं अंतलं नो हुतपुलुवे सवं कालं अठकमेवा पटिवेदाना वा स ममया हेवं कटा सवं कालं अदमानसा

2L. होलधेनसि गभागालसि वचसिव विनितसि उयनासि सवत पटिवेदका अठ जनसा ....वेदेतु मे सवत जनसा

2R. अठं कलामि हप (चा किंछि) सुखते आनपयामि सकं दुपकंवा सावकंवा येवा पुना महामतेहि

3L. अचयिक ..... ताय अठाय विवादे निकंतिव संतपलिसायं अनंतंलियेना (पटि)विये मे सवंकालं हेवं

3R. आनपयिते ममया नथि हि मे दोसे उठानसि अवसंतिलनायेच कटावियमुते हि मे सवलोकहित ... पुन एसमुले उठाने

4L. अठसंतिलनाचा नथिही कमतलां सवलोकहिताया यंच किछि पलकमामि हकं किति भुतानं अंननियं येह हिदचकानि सुखायामि

4R. पलितंच स्वगं आलाधयंतु से एतायेठाये इयं धंमलिपि लिखिता चिलठितिक्ये होतु तथाच मे पुतदाले पलकमातु सवलोकहिता

5L. दुकलेच इयं अनंत अगेना पलेकमनानि

हिन्दी अनुवाद

देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा कहते है। काफि अरसा हुवा (समय बीत गया), इसके पुर्व राज्य मे आवश्यक कार्य न होते थे, और (कार्य की) जानकारी भी नही मिलती थी, इस लिये मैने ऐसे किया है की सारे समय, भोजन समय, अंतःपुर मे, शयनकक्ष मे, पशु-शाला मे, घुड सवारी के समय अथवा उद्यान मे, सभी जगहों पर (किसीभी स्थल-काल) वृत्तदाता स्थिर होकर (शांत होकर, बिना जल्दबाजी से) मुझे प्रजा-जन का वृत्त कहे (कह सकता है)। (मै) सर्वत्र जनता का काम करता हुँ। और जो भी मौखिक आज्ञा देता हुँ, दान संबंधी अथवा घोषणा संबंधी अथवा महामात्रों पर सौंपे गये काम संबंधी, अगर कोई विवाद उत्पन्न होता है या फिर कोई परिचर्चा होने लगे तो, इसकी सुचना मुझे त्वरित सर्वत्र सर्व-समय दी जाय। मै यह आज्ञा करता हुँ। (कितने ही) परिश्रम से अथवा कार्यपूर्ती से मुझे (संपूर्ण) समाधान नही मिलता। सभी लोगों का हित यही मेरा कर्तव्य है। और इसका आधार है परिश्रम और कार्यपूर्ती। सभी लोकहितों से बढकर कुछ भी बडा नही। मै जो कुछ भी प्रयास करता हुँ वह, सभी प्राणिमात्रों से ऋणमुक्त हो जाउं, उन्हे यहाँ सुख दे दुँ और आगे (भी) स्वर्ग-प्राप्ति करा दुँ, इस कारण। यह नीती-लेख चिरस्थायी हो जाय और मेरे पुत्र, पौत्र तथा प्रपौत्र लोकहित के लिये इसका अनुसरण करे, इसलिये लिखवा रहा हुँ। प्रयास के सिवा यह कठीन है।

कालसी शिलालेख क्र. ७ व ८

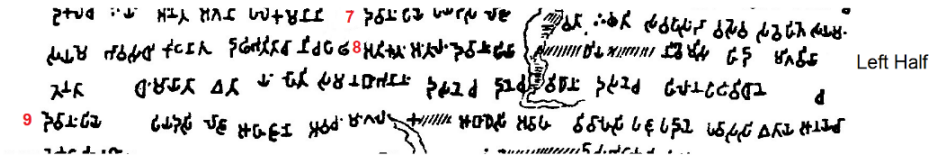

Left Half

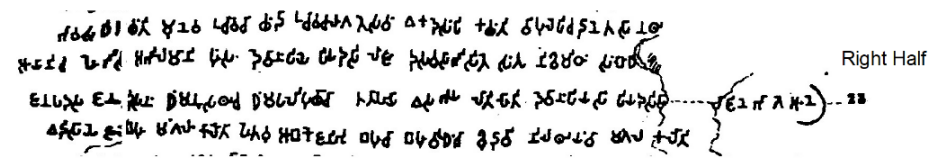

Right Half

देवनागरी लिप्यांतर

1L. देवानंपिये पियदसि लाजा सवता इछति सवपासंडा वसेव सवेहिते सयमं

1R. भवसुधिच इछंति मुनेव उचावचाछंदा उचावचलंग तेसव एकदेसंपि विपुले पि च दाने तसा नथि

2L. सयमे भावसुधा किटनातु दिढभतिताचा निच पाढ

2L. अतिकतं अंतलं देवानंपिये .... धियं ..... निखमिसु हिदा मिगविया

2R. अंयानिच हेडिसाना अभिलामानि हुंसु देवनंपिये पियदसि लाजा दसवसाभिसितेन संतु निखमिठां संबोधि

3L. तेनता धंमायाता एतायं होति समनबाभनानं दसनेच दानंच विधानं दसनेच हिलंनपटिविधानेच

3R. जनपदसा जनदसनं धंमनुसथिच धंमपलिपुछाच ततापयो लाति होति देवनंपियसा पियदसिसा लाजिने भागे अंने

हिन्दी अनुवाद

(७) देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा की इच्छा है की सर्व संप्रदाय सर्वत्र रहें। वे सभी (संप्रदाय) संयम और चित्तशुद्धी की इच्छा रखते है। (परंतु) लोगों को नानाविध इच्छा और नानाविध आसक्ति होती है। (इस लिये) वे (अपने अपने कर्तव्य) पूर्णतः करते है या अंशतः करते है। विपुलता मे दान देने वाला भी, संयम, चित्तशुद्धी, कृतज्ञता तथा दृढ-भक्ति न होने पर तर निश्चितही निकृष्ट (होगा)।

(८) काफि अरसा हुवा (जब) राजे विहार-यात्रा को जाते थे। इसमे शिकार तथा अन्य ऐसेही प्रकार की मौज-मजा की जाती थी। (मगर) देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा अभिषेक के दस वर्ष बाद संबोधि (बोध-गया) गये, इसलिये यह धंमयात्रा। इसमे होते है ब्राम्हण-श्रमणों के दर्शन तथा (उन्हे) दान, बडों के दर्शन और (उनकी) सुवर्ण से परिव्यवस्था (धन से पोषण व्यवस्था), गावों-गावों के प्रजाजनों का दर्शन, धम्म का ज्ञान और उसके अनुरुप धम्म परिचर्चा। यह नित्य हो रहा है। देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा के उत्तर अवधिमे ऐसे होता रहेगा।

गिरनार शिलालेख ८

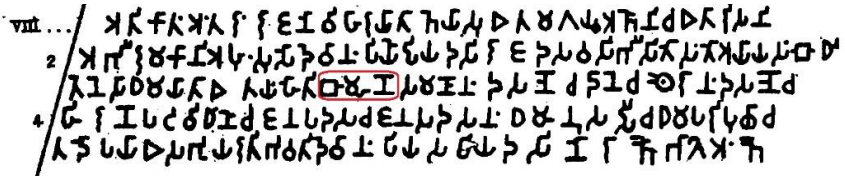

इस शिलालेख मे **समन बाभनानं** की जगह **बाम्हण समणानं लि**खा है। बाम्हण लिखनेके लिये मुलतः “म” को “ह” जोडा जाता था, न की “ह” को “म”, (ब्राह्मण) जो की बादमे ब्राम्हण विद्वांनोंने स्वयं को अलग दिखानेके लिये तथा संस्कृत को अलग दिखाने के लिये नया तरीका बनाया गया है।

कालसी शिलालेख क्र. ९

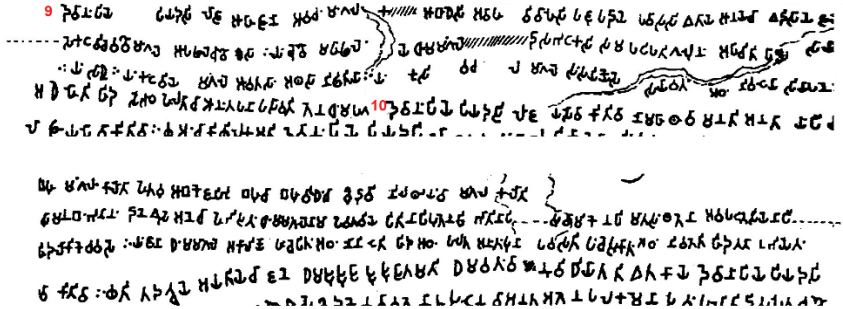

Left Half

Right Half

देवनागरी लिप्यांतरण

1L. देवानंपिय पियदसि लाजा आहा जने उचावुच मंगलं क(लेति) अबाधेसि अवाहसि विवाहेसि पजुपदाये पवाससि एताये अंनायेचा एदिसाने जने

1R. बहु मंगलं कलेंति हेतवु अबकेजनिञ बहुविधंचा खुदाचा निलथियंचा मंगलं कलंति

2L. से कटविचेव खो मंगले अंपफलेचु खा एसे इयंचु खो महाफलें ये धंममंगले ..... दासभटकसि समपटिपति गलुनं अपाचिति पा(नानं) संयमे

2R. सामनबंभनानं दाने एसे अंनेचा हेडिसतं धंममंगलेनामा हेवतविया पितिना पि पुतेन पि भातिना पि सुवमिकेन पि मितसंथतेना अव पटवेसियेना पि

3L. इयं साधु इयं कटविये मंगले आवतसा अथसा निढतिया इयं कुसि ... वच ... ल मंगले संसयिक्येसे सयावतं अवं निवटेया सिया पने नो

3R. हिदलोकिकेच वसे इयं पाना धंममंगले अकालिक्यो हंचे पितं अठं नो निटेति हिद अठं पलत अनंतं पुना पवसति पंचेसु कातं अठं निवतेति हिद तता उभियेतं

4L. अधे होति हिद से अठे पेलताचा अनंत पना पसावति तेन धंममंगले

हिन्दी अनुवाद

देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा यह कहता है। अनेक लोग छोटे-बडे (व्रत-वैकल्य) मंगलाचार करते है। रोगनिवारण के लिये, लडका-लडकी के विवाह के लिये, पुत्रप्राप्ति के लिये, (सफल) यात्रा के लिये, ऐसे अनेक अन्य कारणों के लिये, लोग छोटे-बडे मंगलाचार करते है। इसमे अधिकतर महिलाएँ अनेक प्रकार के क्षुद्र व निरर्थक मंगलाचार करती है। फिर भी मंगलाचार तो करने ही है। इस प्रकार के वैकल्य अल्प-फलदायी होते है। अधिक फलदायी मंगलाचार होते है धम्म-मंगलाचार। इस मे अंतर्भूत है नौकर-चाकरों से यथा-योग्य व्यवहार, बडों का-गुरु का उत्तम आदर, प्राणियों से उत्तम संयम, ब्राम्हण-श्रमणों को उत्तम दान और इस तरह के अन्य (सदाचार), इन्ही को कहते है नीती-वैकल्य (धम्म-मंगल)। इसलिये पिता-पुत्र, बंधु, स्वामि इन सभी को कहे कि, यह उत्तम है, यही मंगलाचार करतें रहे, तब-तक की जब-तक सिद्धता न मिले। ऐसा भी कहा है की, दान देना उत्तम। ऐसा (कोई भी) दान अथवा अनुग्रह (भक्ति) नही जैसे कि धम्मदान अथवा धम्म-भक्ति। इस लिये मित्र, सुहृदयी, रिश्तेदार, सहकारी, इन्हे दृढता से ये कहे कि, हर कोई समय यही करते रहे, यही उत्तम है, इसी से स्वर्ग प्राप्ति होगी। इससे बढ़कर क्या कर सकते है जिससे स्वर्ग प्राप्ति होगी।

(यह अनुवाद गिरनार शिलालेख ९ के साथ तुलना करते हुए किया है।)

कालसी शिलालेख क्र. १०,११

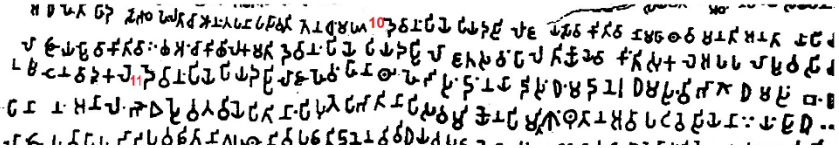

Left Half

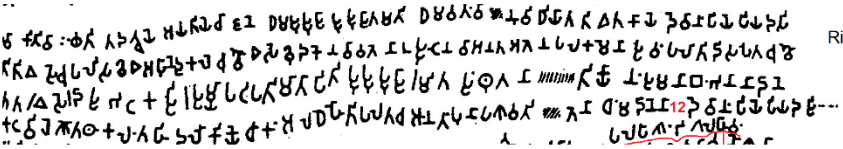

Right Half

देवनागरी लिप्यांतरण

(१०) 1L. देवानंपिये पियदसि लाजा यसोवा कितिवा नो महाथवा मनति अनता यं पि यसो

1R. वा कितिवा इछति तदत्वये अयतियेचा जने धंमसुसुसा सुसुसामति धंमवतंवा अनुविधियंतति एतकाये देवानंपिये पियदसि

2L. लाजा यसोवा कितिवा इछ अंचाकिछि (प)लकमति देवानंपिये पियदसि लाजा तं सवं पालतिक्याये वा किंति सुकले अपपलासव सि

2R. तिति एसेचु पलिसवे ए अपुने दुकले चु खो एसे खुदकेनवा वगेना उसुटेनवा अनत अगेन पलकमेना संवपलतिदिस हेतचु खो

3L. उसटेनवा दुकले

(११) 3L. देवानंपिये पियदसि लाजा हेवं हा नाथि हेडिसं दान येदिसं धंमदाने धंमसंविभागो धंमसंबंधे

3R. तत एसे दासभटकेसि सम्यापटिपति माता पितिसु सुसुसा मितसंथुत नातिक्यानं समना बंभनाना दाने

4L. पानानं अनालभो एसे वतविये पितिनांपि पुतेपि भातिनापि सवमिक्येनपि मितशंथुतान अवापचिवेसि येना इयं साधु

4R. कटवियेशे तथा कलंत हिदलोकिक्येच कं अलधे होति पलतच अंनते पुना पशवति तेना धंमदानेना

हिन्दी अनुवाद

(१०) देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा यश तथा किर्ती को महत्वपुर्ण नही मानते बल्कि वो चाहते है की अब के समय और दीर्घकाल तक मेरी प्रजा (धंम) नीती सुनने लिमे उत्सुक रहे और (धंम) नीती आचरण करती रहे। इसके लिये देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा यश व किर्ती की इच्छा करते है। देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा जो प्रयास करते है वह सभी (प्रजाजन) (भव)पार जावे, और सभी (लोग) दूष्कर्म-मुक्त हो जाय इस लिये। अपुण्य यही है परिस्त्रव। किसी भी छोटे और बडे मानव के लिये उत्तम प्रयास अथवा सर्वत्याग बिना यह कठिन है। बडे व्यक्ति के लिये तो अधिक कठिन।

(११) देवांनाप्रिय प्रियदर्शी राजा ऐसे कहते है। धम्म का परिचय, धम्म का प्रसार, धम्म से अनुबंध इससे (उत्तम) प्राप्ति कोई नही। इसमे अंतर्भूत है, नौकर-चाकरों से यथा-योग्य व्यवहार, माता-पिता की सेवा उत्तम, मित्र-परिचित-जातीबांधव व ब्राम्हण-श्रमण इनको दान उत्तम, प्राणियों के अ-वध (भाव) उत्तम। पिता, पुत्र, भाई, मित्र, परिचित, जातीबांधव तथा निकट रहनेवाले सभी को कहे की "यही उत्तम है, यही करना है", यह करने से इहलोक मे सिद्धी प्राप्त होती है, इस नीती-दान से (धम्मदान से) परलोक मे असीम पुण्य मिलता है।

(कालसी शिलालेख के दसवे शिलालेख और अन्य कई जगहों पर कुछ अभ्यासकों ने **स** की जगह **ष** पढा है। मगर अलेक्झांडर कनिंगहॅम जी ने ब्राम्हि लिपी के निर्मीती श्रोत के चित्र मे यह अक्षर स्पष्ट रुप से **स** ही लिखा है। इस संदर्भ से यहां पर पियदसि लिखा है, पियदषि नही, इस पर गौर करें।)

कालसी शिलालेख क्र. १२

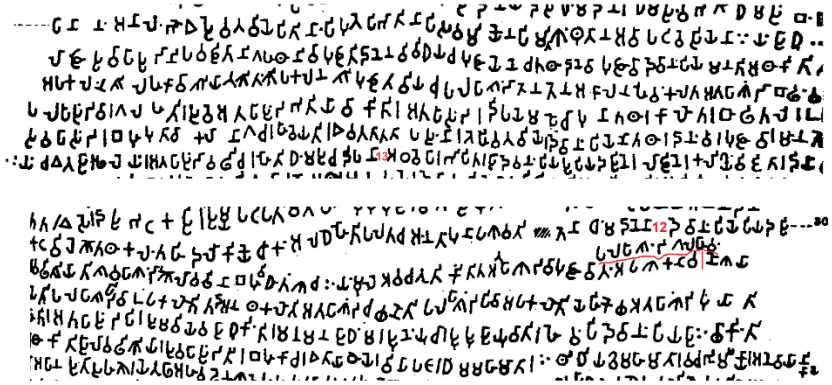

Left Half

Right Half

देवनागरी लिप्यांतरण

1R. देवानंपिये पियदसि

2L. लाजा सवपासंडानि पवजितानि गहथानि पुजति दानेन विविधायच पुजयेनाच तथा दानेवा पुजावा देवानंपिये मनति अथा किति

2R. वढिशियाति शवपाशंडान शालावढना बहुविधातंशच इयं मुले अवचचुति किंतित अतपाशंडावा पुजावा पलपाशंड गलहावंतं अपशकटेव नोशया

3L. अपकलनशि लहकावा शिया तशि तंशि पकलनशि पुजेतवियचु पलपाशंडा तेन तेन अकालन हेवं कंलत अतपाशंडा बाढं वढी

3R यति पलपाशंडा पि वा उपकलोति तदा अनथ कलोति अतपाशंडच छनोति पलपाशंडपि वा अपकलोति येहि केछ अतपाशंडा पुंयाति

4L. पलपासंडवा गलहति सवे अतपासंड भतियावा किति अतपासंड दिपयेमसे चा पुना तथा कालंत बाढतले उपह

4R. हंति अतपासंडपि समवियेव साधुकिंति मनमनसा धंम सुनेयु चा सुसुसायवाति हेवंपि देवानंपियसा इछा किंति

5L. सवपासंड बहुसुताचा कलानागच हुवेयति एव तता तता पसंना तेहि वतविये देवानंपिये नो तथा दानं वा पुजा वा मंनते

5R. अथा किति सालावढि शिया सवपासंडती बहुकाच येतायेठाये वियापटा
धंममहामाता इथिधिय खम महामाता वचभिमीक्या अनेवायानिकाये
6L. इयंच एतसा फलेयं अतपासंडा वढीच होति धंमसच दिपना

हिन्दी अनुवाद

देवांनाप्रिय प्रियदर्शी राजा दान से और विविध पुजनों से सभी संप्रदाय के प्रवज्जित (गृहत्यागी) और (सद्)गृहस्थों का सम्मान करते है। परंतु देवांनाप्रिय किर्ती तथा सारवृद्धी को (जैसे) मानते है (वैसे) दान व पुजन को नही। सारवृद्धी अनेक प्रकार से होती है। इसमे मुख्य है अल्पवाणी (बातें करने पर संयम)। (मतलब) क्या ? तो विनाकारण स्वसंप्रदाय की पुजा और परसंप्रदाय की निन्दा न करें या अल्पसी (चर्चा) त्यों त्यों प्रकरण मे होती रहे। समय समय पर परसंप्रदाय की ही पुजा करे। एसा करने वाला वस्तुतः स्वसंप्रदाय की वृद्धी तथा परसंप्रदाय को भी उपकृत करता है। इससे विपरित करने वाला स्वसंप्रदाय की क्षति और परसंप्रदाय अपकार करता है। जो कोई स्वसंप्रदाय के भक्तिस्तव स्वसंप्रदाय को प्रकाशित करने के लिये स्वसंप्रदाय की पुजा और परसंप्रदाय की निन्दा करता है, वह सत्यतः स्वसंप्रदाय की अधिकाधिक हानी करता है। इसलिये एकसाथ रहना अच्छा है। एक-दुसरे का धर्म (जीवन-तत्व) सुनना और सुनाना (अच्छा है)। देवानंप्रिय इच्छा करते है की, सभी संप्रदाय बहुश्रुत (विद्वान) होते रहे, कल्याणगामी होते रहे। उन प्रसन्न (अपने संप्रदाय में प्रसन्न) जनों को कहे की, देवांनाप्रिय किर्ती तथा सारवृद्धी को मानते है (उतना) दान और पुजन को नही। इसी कारण अनेक धर्म-महामात्र, स्त्री-प्रधान-महामात्र, वज्रभुमिक और अन्य (अधिकारी) नियुक्त किये है। इसी का परिणाम है की, स्वसंप्रदाय की वृद्धी और धम्म का प्रकाशन हो रहा है।

(गिरनार शिलालेख में **अतपाशंड** की जगह **आप्तपासंड** लिखा है। कई विद्वान इसे **आत्पपासंड** पढते है क्योंकी वे इसे संस्कृत शब्द **आत्म** की तुलना में पढते है। वस्तुतः मराठी में **आप्त** का मतलब **स्वकिय** है। मराठी अपरांत प्राकृत (महाराष्ट्री) से बनी है।)

कालसी शिलालेख क्र १३ (पुर्व प्रतल)

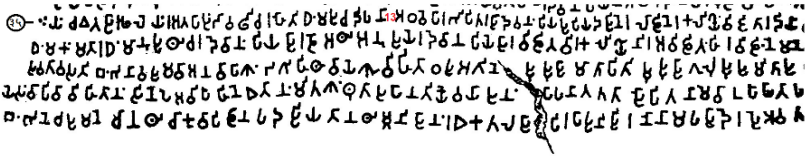

Left Half

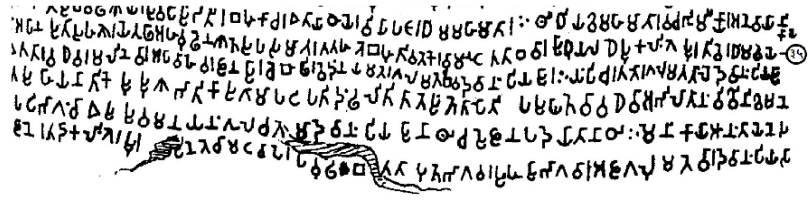

Right Half

देवनागरी लिप्यांतरण

(L1) अठ वसाभिसित सा देवानंपियस पियदसिने लाजिने कलिग्यं विजिता. दियढी

(R1) अ पानसतासहशे ये तुफा अपवुढेन शतेसहसमात तत हते बहुतीवतेके वा मिटे.

(L2) तता ठवा साधुन लधेसु कलिंगेसु तिवे धंमवये धंमकंमते धंमानुसथि च देवानंपियसा. जे अथि अनुसये देवानंपियसा विजितवि कलिग्यानि अविजितंहि विजिंनेमने

(R2) ए तता वध व मलिने वा अपावे हेव जनसा चे बाढी वेदंनयमते गलमते ब व देवानंपियसा. इयं पि च ततो गलुमतताले देवानंपियसा.

(L3) सवता वसति बंभना वे सम वा पाशंड गिहिथा वा येशु विहिता ठस अगिनेसुसुसा माता-पिति सुसुसा गुलुसुसमिता स

(R3) तसहाय नातिके सुसुश भातिकास गामापटिपति दंढलितिता तेसं तेता पोति पसघाते वा वधे वा अभिलातानं वि खि निखमने.

(L4) येसं वा पि वाविहितानं सिनेहे अविपाहिने एतानं मितशंथुतासहानतिक्ये वयासनं पापनात तता सो पि त नामे उपाघाताप

(R4) पटिभागं चा एस सवमनयनं गुलमतेमा देवानंपियसा. नाथि च से जनपदे याता नाठि इमे निकाया आनंता येनेस

(L5) बंभने च समने चा नथि चा कुवा पि जनपदसि यता नथि मूनिसानं एकतलसा पि पासनिसिनो नाम पसादे. से अवता
(R5) जने तदा कलिंगेसु पि नाते चा मटवे पेपवुढ ..ब तता सतेभाग व सहसाभाग वा अज गलुमते वा देवानंपियस.

कालसी शिलालेख क्र १३(उत्तरार्ध),१४ (दक्षिण प्रतल)

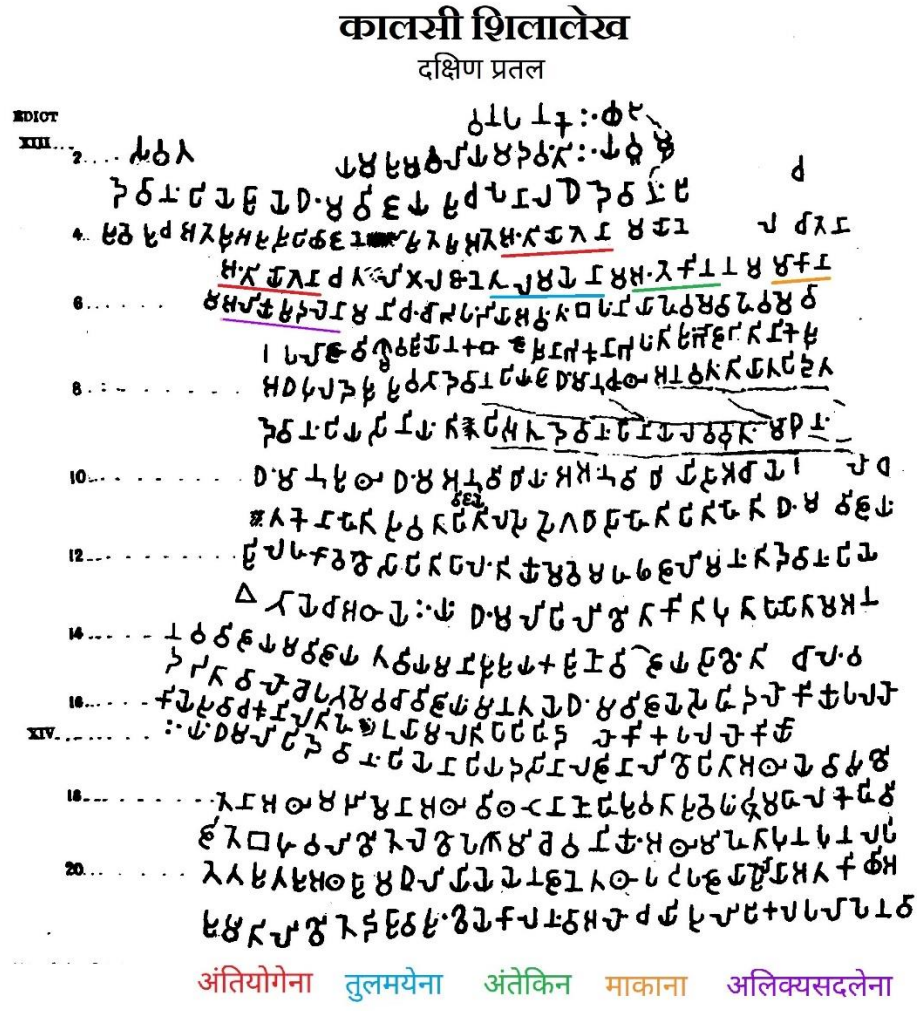

देवनागरी लिप्यांतरण

.....

.... नके इछस .....

सवत ..... इयम ..... लिय मदवं ति इयं वू सु .....

देवानंपियेसा ये धंमविजय स च पेना लधे देवानंपि....

सवेस च अतेसु अससु पि छाजने...सतेस अते अंतियोगे नाम योने ... ल चा तेना

अंतियोगेना च तलि ४ लजाने तुलमये नाम अंतिकेन नाम मका नाम

अलिक्यसदले नाम नीचं चोड पांडिया अवं तंबपंनिया हेवमेवा. हेवमेवा रप

...लजा विश्मवसि योन कबाजेसु नेभकु नाभपंतिसं भज पितिनिकेसु

अधपुलदेसु सवता देवानपियसा धंमानुचुथी अनवतंति यात पि दुत

देवानंपियसि नी यंति ते पि सुतु देवानंपिनिय लववुतं माचुनं

धंमानपसथी धंम अनुविधियं अ अनुविधियि सा अचा ये...लाच

एतकेना होति सवत विजये पितिलसे से गधा सा होति पिति होति धंमविजयंसि

लहका वे खो सा पिति पालंतिक्यमेवे महफला मनंति देवानंपिये.

एताये चा अठाये इयं धंमलिपी लिखिता किति पुता पायोता मे अन

नव विजयम विजतविय मनिसु सयकसि नो विजय से खंति चा लंव

दडतेवा लोचे प तमेव चा विजयं मनत ये धंमविजये से हिदलोकिक्य पललोकिये

सवा च कु निलतिहे..उयाम लति पा पि हिदालोकिक पललोकिक्या

शिलालेख क्र.१४ (पंक्ति-१९)

इयं धंमलिपि देवानंपियेना पियदसिना लजिना लिखापिता अथिये वा संखि

तेना अथि मझिमेना अथि विथटेना नो हि सवता सवे घंटिते महालकेहि

विजिते बहु व लिखिते लेखापेशामि चेव निक्यं अथि मि हेता सुन पुनलपि

तेत सत असथसा मधुलियिये येन जने तथा पटिपजेया से लोया अतकिछि

असमति लिखिते दिसा वा संखिते कालनं वा अलोचयिस लिपिकलपलापेन वा

हिन्दी अनुवाद (१३ वा लेख संपुर्ण)

अभिषेक के आठ वर्षों बाद देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजाने कलिंग जीत लिया। वहाँ से डेढ लाख प्राणी निष्कासीत किये, एक लाख मार दिये और उससे अधिक कई गुना मर गये। अब कलिंग उपलब्धी के बाद देवानंप्रिय के मन मे धम्म-शील, धम्म-आकांक्षा, धम्म-अनुशासन तीव्र हुवा है। कलिंग पर विजय मिलने से देवानंप्रिय पश्चातापित हुवे है। अविजयी पर विजयी होते हुवे वहाँ लोगों के जो वध, मृत्यू और अपहरण होते है, ते देवानंप्रिय को अतिशय वेदनाजनक आणि गंभीर लगते है। परंतु देवानंप्रिय को उससे (अधिक) गंभीर लगता है की, वहाँ जो ब्राम्हण, श्रमण, अन्य संप्रदायी और गृहस्थ लोग रहाते है, जो वृद्धों की सेवा, माता-पिता की सेवा, गूरुजनों की सेवा करते है, मित्र, परिचित, सहकारी, आप्त, नौकर-चाकर इनसे यथा-योग्य व्यवहार करते है, उनके अपघात, वध होते है, प्रियजनों से वियोग होता है। अथवा जो लोग सुव्यस्थित है परंतु मित्र, परिचित, सहकारी, आप्त दूर्भाग्यग्रस्त होने से जिनके स्नेह की क्षति हुई है, उनको भी आघात होता है। सभी जनों को यह समान (महसुस) होता है। लेकीन देवानंप्रिय को गंभीर लगता है। एक भी संप्रदाय से प्रसन्नता न हो एसा कोई भी नही। इसलिये जितने लोग वहाँ कलिंग मे मारे गये, या मर गये, या अपहृत हुवे, उससे शतांश या सहस्त्रांश भी आज देवानंप्रिय को गंभीर लगता है। (देवानंप्रिय की राय से, जो कोई अपकार करे तो उसे भी क्षमा करना संभव हो तो क्षमा करनी चाहिये। – **शहाबाजगढी के लेख अनुसार**)

(अगला भाग दक्षिण प्रतल से)

(देवानंप्रिय सभी प्राणिमात्रों का कल्याण, संयम, निःपक्षपात की इच्छा करते है। - **क्षतिग्रस्त अक्षरों के लिये शहाबाजगढी के लेख अनुसार**)

देवानंप्रिय की राय से यही महान विजय है। यह देवानंप्रिय ने प्राप्त किया है, यहाँ और सभी पडोसी राज्य मे भी। छह सौ योजन तक जहाँ अंतियोग नाम का यवनराजा और अंतियोग के परे ४ राजे तुरमय नाम का, अंतिकेन नाम का, मग नाम का, अलिक्यसदल नाम का और निचे चोड, पांडिय, तंबपनी। इसी प्रकार इस राज्य के राजे यवन, कंबोज, नाभक, नाभपंति, भोज व पितानिक, आंध्र व पुलिंद सर्वत्र धम्म अनुशासन का पालन हो रहा है। जहाँ देवानंपिय के दूत पहुँचे

नही वहाँ भी देवानंपिय के वचन, विधान और धंम अनुशीलन सुनकर प्रजाजन वैसा आचरण करते है। इस प्रकार सर्वत्र विजय हुवा है। प्रीतीरस से विजय मिला है। प्रीती धम्मविजय से मिलती है। लेकीन यह छोटासा (यश) है। देवनंपिय केवल परमार्थ को ही महान विजय मानते है। इसिलिये सह नीती-लेख लिखवाया है। किसलिये ? की मेरे पुत्र, पौत्र यह सभी ऐसे (सशस्त्र) विजय को न माने मगर यह नवीन विजय को ही मानते रहे। वे क्षमा और लघु दंड मे ही स्वारस्य मानते रहे। इसी मे विजय मानते रहे जो धम्मविजय है। इसी मे इहलौकीक और परलौकिक है। यह परम आनंद दायक है, इहलोक में और परलोक मे।

शिलालेख क्र. १४

हिन्दी अनुवाद

यह नीती-लेख देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा ने लिखवाये है। यह संक्षेप में है, मध्यम है, विस्तृत है। सभी (बातों का) सर्वत्र मेल न होता होगा। (मै ने बहुत) विशाल जीत लिया है, बहुत लिखवाया है, लिखवाना भी है। यहाँ जैसे जैसे मधुर (अच्छा), है, बार बार (लिखवाया) है, ताकि लोग वैसा प्रतिपादन करें। एकाध (जगह) लिखावट में समतोल न होगा कारण की वह प्रदेश (प्रदेश – स्थान) क्षतीग्रस्त होगा, या दूसरे के (गलत) कहने से या लेखनिक के अपराध से (गलती से)।

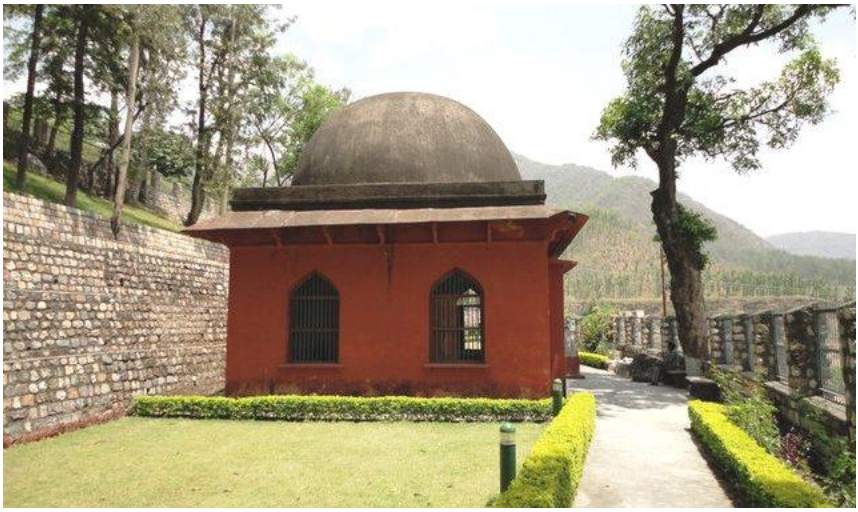

सम्राट अशोक के लेख,
आज्ञा नही केवल धंम-लेखन

सम्राट अशोक के शिलालेखोंमे बृहद् शिलालेख श्रुंखला एक महत्वपुर्ण अध्ययन विषय है। इसका एक एक पहलु सम्राट की सूक्ष्म जानकारी देने में सक्षम है। इस शिलालेख श्रुंखला के लिखवानेसे पहले सम्राट ने लघु शिलालेख लिखवाये थे। लेकीन यह कब लिखवाये थे इसका कोई अवधी किसी शिलालेख में लिखा नही है। बृहद् शिलालेख का एक चरण निश्चित ही अभिषेक के बारह वर्ष बाद लिखवाया था, यह बात सम्राट ने इस श्रुंखला के चौथे लेख में लिखी है लेकीन तुरंत बाद पाँचवे लेख मे अभिषेक के तेरह वर्षों बाद महामात्रों की नियुक्ति की बात आती है। इससे यह बात बिलकुल जाहिर है की पाँचवाँ लेख तेरह वर्षों बाद, महामात्रों की नियुक्ती के तुरंत बाद लिखवाया गया था। कालसी शिलालेख की पंक्तियाँ शिला के बाँये छोर से दायी तरफ बिना किसी रुकावट या बिना किसी अंतराल से लिखी गयी है। एक के बाद दो और तीन क्रमांक के लेख नई पंक्ति मे शुरु नही होते, बल्कि पहला शिलालेख खत्म होते ही उसी पंक्ति में अगला शिलालेख शुरु होता है। इससे भी यह बात साबित होती है की एक, दो और तीन यह शिलालेख एक साथ लिखवाये थे। तिसरे शिलालेख में लिखा है की अभिषेक के बारह वर्षों बाद मैने युक्त, रज्जुक प्रादेशिक इन अधिकारीयों को नियुक्त करते हुवे हर पाँच-पाँच साल मे अपने कार्यक्षेत्र मे दौरा करने को कहा है। अतः यह शिलालेख भी अभिषेक के बारह साल बाद लिखा गया है। चौथा शिलालेख नई पंक्ति (नौवी पंक्ति) में शुरु होता है। इन सभी बातों पर गौर करने से यह साबित होता है की एक से तीन तक के लेख अभिषेक के बारह वर्षों बाद, वर्ष के अंतमे एक साथ लिखे गये थे। इसी समय तेरहवाँ वर्ष भी शुरु हुवा। महामात्रों की नियुक्ति हो गयी, और शिलालेखों का दुसरा चरण लिखना शुरु हुवा।

शिलालेख क्रमांक एक से तीन की तरह चौथे से लेकर आठवे लेख तक दो लेखों के बीच कोई अंतराल नही है। नौवाँ लेख नयी पंक्ति (पंक्ति क्रमांक चौबीस) मे शुरु होता है। फिर दस, ग्यारह, बारह और तेरहवे लेखका पुर्वार्ध लिखा गया है। तेरहवे लेख का पूर्वार्ध और चौदहवा लेख शिला के दक्षिण प्रतल पर लिखा गया है।

इस बातकी तुलना अगर धौलि के लेखों के साथ कि जाय तो यहाँ पर हर एक शिलालेख खत्म होनेपर अगला लेख नई पंक्तिमे शुरु होता है। एक से छह एक स्तंभ मे और सात से दस और चौदहवाँ दुसरे स्तंभ मे इसी तरह लिखा गया है। जौगड मे भी धौलि की तरह एक से पाँच एक स्तंभ मे और छह से दस तथा चौदहवाँ दुसरे स्तंभ मे लिखा गया है।

गिरनार शिलालेख मे हर लेख के लिये रेखांकित चौकोन खिंचे गये है। एक से लेकर पाँच एक स्तंभ मे, फिर छह से लेकर बारह तक दुसरे स्तंभ में लिखे गये है। तेरहवाँ पहले दो स्तंभों के नीचे बीच में और चौदहवाँ उसीके पास लिखा है। गिरनार में लिखे लेखों की शिला शुंडाकार (उपर छोटी तथा नीचे मोटी) होनेके कारण एक से बारह तक सभी लेखों मे उपरी पंक्तियाँ छोटी और नीचे बडी पंक्तियाँ लिखी है। यहाँ पर इस शुंडाकार शिला का बाँयी तरफ का निचला हिस्सा टुट जानेके कारण पाँचवे लेखकी पाँचवी से लेकर नौवी (आखरी) पंक्तियाँ अपना शुरवाती हिस्सा खो चुकी है। तेरहवाँ लेख यहीं पर शुरु होता है, इसलिये इसकी सारी पंक्तियाँ अपना शुरवाती हिस्सा खो चुकी है।

इस बातको ऐसे विस्तारसे लिखनेका कारण यह है की, यह शृंखला एक साथ नही बल्कि दो या तीन चरणों में लिखी गयी होगी, और यह सारा अवधी अभिषेक के बारहवे वर्ष के बाद तथा तेरहवाँ वर्ष समाप्त होते होते लिखी गयी है। यह बात हुई इस शृंखला के समय निश्चिती की। अब यह शृंखला लिखते समय सम्राट अशोक के समकालीन यवन राजाओं के नाम सम्राट अशोक ने लिखवाये है। यह नाम इस प्रकार है ....

अँटीगोनस (दूसरा), अँटीयोकस (दूसरा), टोलेमी (दूसरा), मगास, अलेक्झांडर. इन राजाओं का सामयिक अवधि देखें तो यह इ.स.पूर्व २६२ से इ.स.पूर्व २५५ तक का होता है। अगर यह शिलालेख (विशेषतः पाँचवाँ लेख जो अभिषेक के तेरहवें वर्ष में लिखा होने की संभावना है, इस कारण तेरहवाँ लेख भी अभिषेक के तेरहवें वर्ष में लिखा होने की संभावना है।) इसी अंतराल में लिखा गया होगा तो यह इ.स.पूर्व २५७ में लिखा होने की अधिक संभावना है। इसी बात से यह साबित होता है की इ.स.पूर्व २५७ से पहले बारा वर्ष अर्थात इ.स.पूर्व २६९ में सम्राट अशोक का राज्याभिषेक हुवा होगा। मेरी और एक पुस्तक **सम्राट अशोक के लघु-शिलालेख** में सम्राट अशोक के लघु-शिलालेख क्रमांक १. के संदर्भों से भी मैने यह बात प्रमाणित की है की, लघु-शिलालेख लिखने से २५६ वर्ष पहले

तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुवा था तथा लघु-शिलालेख राज्याभिषेक के बाद दसवे वर्ष में अर्थात नौवें वर्ष बाद लिखे थे। इन दो अनुमानों को गौर से समझे तो यह बात निश्चित होती है की, लघु-शिलालेख बृहद शिलालेख लिखनेसे करीब तीन वर्ष पहले अर्थात इ.स.पूर्व २६० में लिखे गये थे। इससे यह बात निश्चित रुप से प्रमाणित होती है की **तधागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण इ.स.पूर्व २६० से पहले २५६ वर्ष अर्थात २६० + २५६ इ.स.पूर्व ५१६ में हुवा था।**

अब हम इन लेखोंके माध्यम से सम्राट के अभिव्यक्ति की बात करे तो इन लेखों के लिखनेका पहला चरण सम्राट अपने प्रजा के हित की बाते करते है। जैसे की पहले लेख मे वे **अहिंसा** को बढावा दने की बात करते है। लेकीन सम्राट अशोक की एक बात सबसे अधिक प्रशंसनीय यह है की वे हर बात पहले स्वयं करते है, और फिर अपनी प्रजा को इसे अपने स्वयं के सबुत के साथ बताते है। यहाँ पर वे केवल **पाणाति पाता वेरमणी** नही कहते है परंतु **सिक्खापदं समादियामि** अधिक प्रखरतासे कहते है। दुसरे शिलालेख मे वे प्रजा हित के लिये अपने किये हुवे कार्य का हिसाब लगाते है। इस पर भी वे अपने और पराये ऐसा भेद नही रखते। अपनी प्रजा के साथ साथ वे अपने पडोसी प्रजाजनों का भी ध्यान रखते है। अब तिसरे लेख मे वे अपनी प्रजाको आश्वस्त करते है की, उन्हे अपनी प्रजा की पुरी पुरी फिक्र है। वे स्वयं भलेही सब जगह ध्यान न दे सके, उन्होने इसके लिये निम्न स्तर तक ध्यान रखने वाले अधिकारी नियुक्त किये है। इन अधिकारीयों को प्रजाहित मे व्यस्त रखनेके लिये हर पाँच वर्ष मे अपने क्षेत्र मे हर जगह पहुँचने के आदेश देते है। यहींसे शायद हमारी आज की पंचवार्षिक योजना ने जन्म लिया है। अब यहाँ सम्राट के विचारों का एक दुसरा चरण शुरु होता है।

अब वे अपनी प्रजाके भौतिक सुखोंका ध्यान रखने के साथ साथ अभि-भौतिक सुखों का विचार करते है। यहाँ आता है सम्राट अशोक का धंमविचार। इसे सम्राट **धंमानुसथी** कहते है। सम्राट के इस धम्मानुशासन का मतलब है जीव-अहिंसा, सभी संप्रदायों के प्रति सद्-भाव और सभी जनोंके प्रति आदर, माता-पिता गुरुजन तथा जोष्ठ इनकी सेवा शुस्रुशा। अगर यहीं बाते सम्राट के अभिव्यक्ति अनुसार **धंम** है, तभी वे इन लेखों को **धंमलिपी,** हिन्दी मे **धंम-लेखन** कहते है। अपनी प्रजाजनों के लिये धंमका लिखीत व्यवस्थापन **– धंम-लेखन**।

अपने पाँचवे शिलालेख मे सम्राट अशोक यह धंमानुशासन केवल अपने आप तक सीमीत न रहे, यह अपनी अगली सभी पीढीयाँ भी इसी राह पर चलती जाय

ऐसी कामना करते है। अपने पुत्र-पौत्रों को वे बताते है ... **सब्ब पापस्स अकरणं, कुसलस्स उपसंपदा, सचित्त परियोदपनं एतं बुद्धान सासनं।** पिछले लेख में जो छोटे अधिकारीयों की नियुक्ति की बात सम्राट करते है, अब यहाँ वे धंममहामात्रोंकी नियुक्ती की बात करते है। जैसे महामात्र, जो राज्यका अनुशासन करते है, उसी प्रकार ये धंम का अनुशासन करेंगे। यह धंममहामात्र केवल किसी एक संप्रादाय के लिये नही होंगे, बल्कि सभी संप्रदायों में नियुक्त होंगे, सभी प्रांतोमे, और स्वयंके राज्य के पार भी यह नियुक्त होंगे।

छठे लेख मे सम्राट अधिक बात करते है, राज्यशासन व्यवस्था की। राज्य अनुशासन के अधिकारीयों पर शासन की जिम्मेदारी तो होती ही रहती है, मगर महामात्रों के कार्य से या अन्य किसी करण कोई विवाद उत्पन्न हो तो उसकी सुचना करने के लिये प्रजाजनों का अपने राजा को कहीं भी और कभी भी मिलना संभव है। यह व्यवस्था आज के लोकपाल का सम्राट अशोक ने किया हुवा प्रावधान ही तो है। यह व्यवस्था केवल अब के लिये नही परंतु आने वाले भविष्य के लिये भी अनुकरणीय हो, तो यह चिरस्थाई होने हेतु पत्थरोंपर लिखवाया है, यह है **धंम-लेखन**। इंग्लिश संशोधक Edicts of Ashoka कहते है लेकिन यह Edicts नहीं बल्कि Fiats है।* सम्राट कहते है, मै इससे सभी प्राणी (प्रजाजन) के ऋण से मुक्त हो जाऊं इस लिये मै यह प्रयास करता हुँ।

यह है सम्राट अशोक की शिलालेखों से अभिव्यक्ति।

सांतवाँ लेख बिलकुल छोटा है और सभी संप्रदायी सभी जगहों पर रहें तथा अपना चित्त शुद्ध रखें यह बात कहते है। आँठवे लेख मे वे अपने अभिषेक के एक दशक बाद यात्रा की बात करते है। यह यात्रा विहार, शिकार या कोई मौज-मस्ती के लिये नही परंतु बोधगया के लिये धंमयात्रा रही है। यह यात्रा केवल **संबोधि** के अभिवादन के लिये ही नही बल्कि इससे वे ब्राम्हण, श्रमण, जेष्ठ-जन इनके दर्शन, उनके साथ परिचर्चा और उनके परिपोषण की व्यवस्था करते है। यही है सम्राट अशोक का **धंमानुशासन**।

नौवें लेख मे सम्राट तरह तरह के मंगलाचारोंपर प्रकाश डालते है, और कहते है की इन सभी मंगलाचारों से अधिक श्रेष्ठ है धंम-आचार। इस लेखमे वे महिलाओंको कहते है, क्योंकी अधिकतर मंगलाचार महिलायें करती है। वे महिलाओंको धंमाचार तो बताते ही है लेकीन इसके अनुसरण के लिये वे महिलांओ पर ही इसका उत्तरदायीत्व सौंपते है। वे कहते है की महिलायें अपने

पिता, बंधु, पती तथा पुत्र को कहें की धंमाचार ही सर्वश्रेष्ठ मंगलाचार है, वहीं करें और औरोंको भी समझाये।
दसवे शिलालेख मे सम्राट यश और किर्ती को अधिक महत्व नही देते फिर भी वे यश और किर्ती इसलिये चाहते है की वे स्वयं धंमाचार का प्रसार करते रहे और अपनी प्रजा को दुष्कर्म-मुक्त करते रहे। ग्यारहवे लेख मे धंमाचार की ही बाते दोहराते है। शब्द बदलते है, लेकिन उसके सार वही रहते है।
बारहवाँ लेख अत्यंत महत्वपुर्ण है। इस मे सम्राट के जो विचार प्रकट होते है उसकी महत्तता युगों तक समाज को एक उत्तम दिशा देती रहेगी। इस लेख मे सम्राट सर्व-संप्रदाय-समन्वयन की बात करते है, आपसी स्नेह बढाने की बात करते है। वैयक्तिक प्रतल पर स्नेह तो वे पहले ही समझा चुके है, यहाँ वे सांप्रदायीक स्नेह की बात करते है। वे अपने संप्रदाय की स्तुती करने पर जोर नही देते बल्कि पर-संप्रदाय को सम्मानीत करने की बात करते है, और कहते है की इसी व्यवहार से आप अपने संप्रदायका सम्मान बढाते है।
तेरहवाँ लेख भी महत्वपूर्ण है, इसलिये की इसमे वे अभिषेक के आठ वर्ष बाद कलिंग विजय की बात करते है। कलिंग विजय से उन्हे आत्मक्लेश हुवा है, और वे बहुत दुखी हुवे है। फिर वे धंमाचरण का प्रचार प्रसार करने की ठान लेते है और चारों ओर धंममहामात्र भेजते है। अपने सभी पडोसी राज्यों मे भी अपने दूत भेजते है। इन सभी राज्यों के राजाओं का नाम वे इस लेख में लिखते है। इससे हमे उनके समकालीन राजाओं के काल से तुलना करते हुवे सम्राट अशोक के इतिहास का निश्चित काल ज्ञात होता है। वे बताते है की उनका धंमप्रचार उनके साम्राज्य मे ही नही बल्कि उसके पार और पडोसी राज्यों के भी पार होता है।
अंतिम तथा चौदहवा लेख वे केवल समापन करने के लिये लिखते है, लेकीन आगे और भी लिखना है ऐसे कहकर एक ओर समापन लेकीन दूसरी ओर नयी शुरवात की भी बात करते है।
इन सभी बातों पर गौर करें, इसका सुक्ष्म अध्ययन करें तो यह बात निश्चित समझी जाती है की, इन लेखों मे सम्राट हर जगह धंम की बात करते है। सम्राट अशोक के विचारों से सु-चरित्र ही धंम है। यह सारा लेखन अपना प्रजा को सु-चरित्र से परिपूर्ण करने का प्रयास है। तभी यह सारा लेखन केवल **धंम-लेखन** है।

* Edicts = Forceful Order , Fiat = Righteous Order

सम्राट अशोक कालीन भारतीय लिपी

ब्राम्हि वर्णमाला

अ	आ	इ	ई	उ
ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	स	ह	ळ	अं

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ

सभी ब्राम्हि व्यंजनों का इकारान्त रूप

इसी प्रकार व्यंजनों को सभी स्वरों से युक्त किया जाता है।
सभी स्वरों की मात्रा चिन्ह (Diacritic symbols) बाये पृष्ठ पर दीये गये है।
अनुस्वार चिन्ह दायी ओर उपर की तरफ बिंदी लगाकर लिखा जाता है।
संयुक्त अक्षरों के लिये पहले उच्चारण का अक्षर उपर और दूसरे उच्चारण का अक्षर पहले अक्षर को नीचे जोडकर लिखा जाता है। फिर इसे एक अक्षर समझकर इस को स्वर की मात्रा लगाई जाती है।
कालसी शिला के दक्षिण पृष्ठ पर तेरहवें लेख का अंतिम शब्द पललोकिक्या में क अक्षर को य अक्षर नीचे जोड़ा गया है तथा इस संयुक्ताक्षर को एक अक्षर समझकर उसे आ की मात्रा लगाई है।

सम्राट अशोक की समय निश्चिती

अलेक्झांडर से सम्राट अशेक तक का कालावधी (इ.स.पूर्व)		पाँच समकालीन राजाओं का सामायिक कालावधी (इ.स.पूर्व)	
अलेक्झांडर भारत से लौट जाना	३२३	टोलेमी (दूसरा)	२८६ से २४६
चंद्रगुप्त मौर्य का शासन	३२२ से २९८	अँटीगोनस (दूसरा)	२७७ से २३९ (दो बार राजा)
बिंदूसार मौर्य का शासन	२९८ से २७२	मगास	२७६ से २५०
सम्राट अशोक का राज्यारोहण	२७२	अलेक्झांडर (दूसरा)	२७२ से २५५
सम्राट अशोक का अभिषेक	२६९	अँटीयोकस (दूसरा)	२६२ से २४६

सम्राट अशोक का काल	सम्राट अशोक के जीवन संदर्भ	इसवी सन पूर्व वर्ष	पाँच समकालीन रजाओं का सामायिक अवधी	गौतम बुद्ध के पश्चात कालगणन
राजकुमार अशोक		२७५		२४१
		२७४		२४२
		२७३		२४३
अभिषेक पूर्व राजा अशोक	राज्यारोहण	२७२		२४४
		२७१		२४५
		२७०		२४६
१	राज्याभिषेक	२६९		२४७
२		२६८		२४८
३		२६७		२४९
४		२६६		२५०
५		२६५		२५१
६	उपासक	२६४		२५२
७	उपासक	२६३		२५३
८	कलिंग युद्ध	२६२	पाँच समकालीन राजाओं का सामायिक कालावधी	२५४
९	संघ के समीप, लघु-शिलालेख लेखन और संबोधी यात्रा	२६१		२५५
१०		२६०		२५६ @
११	कंदाहर शिलालेख	२५९		२५७
१२	बृहद शिलालेख का लेखन	२५८		२५८
१३		२५७		२५९
१४		२५६		२६०
१५		२५५		२६२
१६		२५४		२६३
१७		२५३		२६४
१८		२५२		२६५
१९		२५१		२६६
२०	लुंबिनी, कोनागमन स्तुप यात्रा	२५०		२६७

@ - तथागत गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण का २५६ वा वर्ष
तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण इसा पूर्व ५१६ या ५१७ में होनेका अनुमान निश्चित है।

कालसी का सफर दूसरी बार करने की मनीषा करीब बारह वर्षों के बाद सफल हुवा।

कालसी शिलालेख का दूसरी बार का सफर

सम्राट अशोक के रुपनाथ स्थित शिलालेख को पढ़ते हुए

सम्राट अशोकने जो लघु-शुलालेख लिखवाये है, वह अभिषेक के पश्चात
नौवे या दसवे वर्ष मे लिखवाये गये थे यह अनुमान है।
इस रुपनाथ शिलालेख मे तथा अन्य लघु-शिलालेखोंमे

“२५६ समय दुर रहते हुवे यह घोषणा करता हुँ ”

यह उल्लेख मिलता है।
कहीं इसका अर्थ **बुद्ध के २५६ वर्ष बाद** ऐसा तो नही ?
(ज्येष्ठ बौद्ध इतिहास संशोधक श्री. बेनि माधव बरुआ
तथा डॉ. जॉर्ज बुह्लेर भी इस को मानते है।)